

राष्ट्रीय

सन्दर्भ



कानपुर ● शनिवार ● 29 अक्टूबर ● 2022

लाल मसूर दाल में बड़े गुण, पौष्टिकता का खजाना

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
कानपुर।

दलहन उत्पादन करने के क्षम में वैज्ञानिक कृषि एवं प्रौद्योगिकी विभिन्न ने किसानों को वैज्ञानिक तरीके से लाल मसूर दाल के उत्पादन व कानपुर के लिए प्रोत्साहित करना चुना किया है। साल मसूर दाल के गुणों का वर्णन करते हुए वैज्ञानिकों ने कहा कि अन्यथिक पौष्टिकता के कारण

वार्षिक में इमर्जी मांग करावर बड़ी रहती है। यदि किसान आधुनिक वैज्ञानिक तरीके से इमर्जी सेवी करें तो दामों की उपर 20 से 25 कुंतल एवं भूमि की उपर 30 से 35 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक



सीएसए कृषि वित्ति ने मसूर उत्पादन पर दी किसानों को सलाह

सीज बढ़ायी है।

लाल दाल के नाम से जाना जाने वाले मसूर दाल में पौष्टिकता का खजाना है। मसूर के 100 ग्राम दाल में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम कमर, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैलियम, 7 मिलीग्राम लौह, 0.21 मिलीग्राम पायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियमीन पाया जाता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है।

इसके सेवन से दमत, बहुमूत्र, प्रदर, कठजा व अनियमित पालन किया में लाभ मिलत है। इमर्जी हुआ व सूखा चारा पत्तुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है।

मसूर उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है भारत

विश्व के अधीन संचालित दलीपगढ़ कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभार वैज्ञानिक द्वा, विनोद प्रकाश के अनुग्रह दलहनी पमलों में मसूर का अपना अलग ही महत्वपूर्ण स्थान है। अन्य दालों की अपेक्षा इसमें सभीषिक पौष्टिकता पाई जाती है। मसूर उत्पादन में भारत को अपनी कानों हुए उन्होंने कहा कि विश्व में अभी भारत का मसूर उत्पादन में दूसरा स्थान है। नियांगा अभी उत्पादन और कानों की जरूरत है। रोगियों के लिए तो यह दाल अत्यंत लाभकारी है।

नवम्बर मध्य तक बुआई कर प्राप्त करें बेहतर उत्पादन

शेष छात्र प्रमुख मचान ने किसानों को सलाह दी है कि मसूर के अधिक दैनिक के लिए मध्य नवम्बर तक बुआई उपयुक्त है। मध्य में बुआई के लिए 30 से 35 किलो व दो तो 25 कुबिक के लिए 50 से 60 किलो बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। बेहतर उत्पादन के लिए उर्ध्वक में 20 किलो नियम, 40 किलो पाल्यफोरम, 20 किलो पेट्रोल व 20 किलो माल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिनकी कमी करने के लिए 25 किलो प्रति हेक्टेयर जिंक का भी प्रयोग करना चाहिए। किसानों को मसूर की उन्नत प्रजातियों डीपीएल 15 व 62, नूरी, के 75, अर्द्धरेष्ट 81 व एसएस 218 का उपयोग करने की सलाह की गई है।



लखनऊ

पार्ट: 14 | अंक: 18

बहुमा: ₹ 3.00/-

पेज: 12

दिल्ली । 29 अक्टूबर, 2022

मस्तक ट्रिप्टर की आजादी के पछादार

प्रियोग के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। इसकी विद्युतीय विकास नहीं हो सकता।

जन एक्सप्रेस



@janexpressnews



janexpresslive



www.janexpresslive.com/epaper

5,600 लक्ष्याधिकीय छानी हो सकती है छानी

- द बैंगनगढ़ एमट की एक रिपोर्ट के अनुसार, मस्तक कामों के 7,500 लक्ष्याधिक में से 75 लक्ष्याधि, यारी करीब 5,600 लक्ष्याधियों को नीकरी से हटा लाये हैं। उन्होंने डिप्टर बीस के लेनन संचालित नियोगीहो से यह बता करी है। अन्यथा, यह रिपोर्ट आगे के बढ़ डिप्टर के लम्भत लाइसेंस सीन एमट ने इससे अनुचित लिया है। लक्ष्याधियों को इमेज भेज कर बता कि वाम्पे छानी को लेनन बोर्ड परम नहीं कर सकती है।

किसानों को मसूर की फसल के बारे में दी जानकारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर

आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. विनोद प्रकाश ने बीते दिन शुक्रवार को किसानों को दलहनी फसलों में मसूर के विषय में जानकारी दी। उन्होंने

बताया कि लाल दाल के नाम से जानी जाने

वाली मसूर के उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन, 0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने मसूर की उन्नतशील प्रजातियों व इसकी बुवाई से संबंधित जानकारी दी।



सुप्रवार 28 अक्टूबर 2022 | अंक - 284

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

 www.twitter.com/worldkhabarexpress  www.facebook.com/worldkhabarexpress  www.youtube.com/worldkhabarexpress **MID DAY**

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसानः विनोद प्रकाश



गोपनीय। चंद्रलोहर ऊजाद चौथे लवं प्रीतोगिको विश्वविद्यालय कानपुर के आधीन संचालित चूपि विज्ञान चेंटर दार्शनिकगत के प्रमाण वैज्ञानिक उर्ध्व विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी पक्षालों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल किसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर ऊजादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया कि मसूर ऊजादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है।

याम लस, 7.8 याम काबोडाइबूट, 3.2 याम रेल, 68 मिलीयाम कैलियाम, 7 मिलीयाम लोहा, 0.2 1 मिलीयाम राइबोफलेनिं, 0.51 मिलीयाम वापर्मीन और 4.8 मिलीयाम विषमिन चापा जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके में से अप्प दालों वही अनेक सार्वजनिक पीड़ितों का पार्द जाती है। उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अन्यत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस, चतुर्थ, प्रदर, कम्ब व अनियमित पाचन किया जाना में औसतन 25 दाने प्रीतीन, 1.3



साधकरी है। इसका हरा व सूक्ष्म चरण पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पीड़िक होता

है। लोध लात्र प्रमूल सरकार ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इसमें अधिक ऐचाकर के लिए वायर लात्र कर इसको चुपाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उमसीत प्रजातियां चैम्स-डीचैम्स 15, हीमीएल 62, गूरी, के 75, आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमूल हैं। उन्होंने बताया कि समय से चुपाई के लिए 30 से 35 किलोयाम एवं देर से चुपाई के लिए 50 से 60 किलोयाम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उपरक 20

किलोयाम जप्राजन, 40 किलोयाम पहाड़ीरस, 20 किलोयाम पीटाल एवं 20 किलोयाम सलाकर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिसके बीच कमी खाले जाने में 25 किलोयाम लिंक प्रति हेक्टेयर बीज दर से है। चुपाई के पूर्व बीज वह सोखन अवश्य कर दें। ऊजादन प्रवाल ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उत्तम खेती करें जो दानों के उत्तम 20 से 25 कूप्सल एवं भूमि की उत्तम 30 से 35 कू. प्रति हेक्टेयर स्तर जा सकती है।

मसूर की दाल सेहत

के लिए फायदेमंद

मसूर की वैज्ञानिक खेती

कर अधिक लाभ कमायें

किसान



टीटीएलएल

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया कि मसूर के 100 ग्राम दाने में ३० से ३५ ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.21 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन, 0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है। उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र, प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी



है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उत्तरशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15, डीपीएल 62, नूरी, के 75, आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उत्तर खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है।

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान



वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश

■ मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान

कानपुर, 28 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम काबोडाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है। उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र, प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सच्चान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15, डीपीएल 62, नूरी, के 75, आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वस्क 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20



मसूर की फसल।

किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले शेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है।

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/2

: 291

एटा से प्रकाशित

शनिवार 29 अक्टूबर 2022

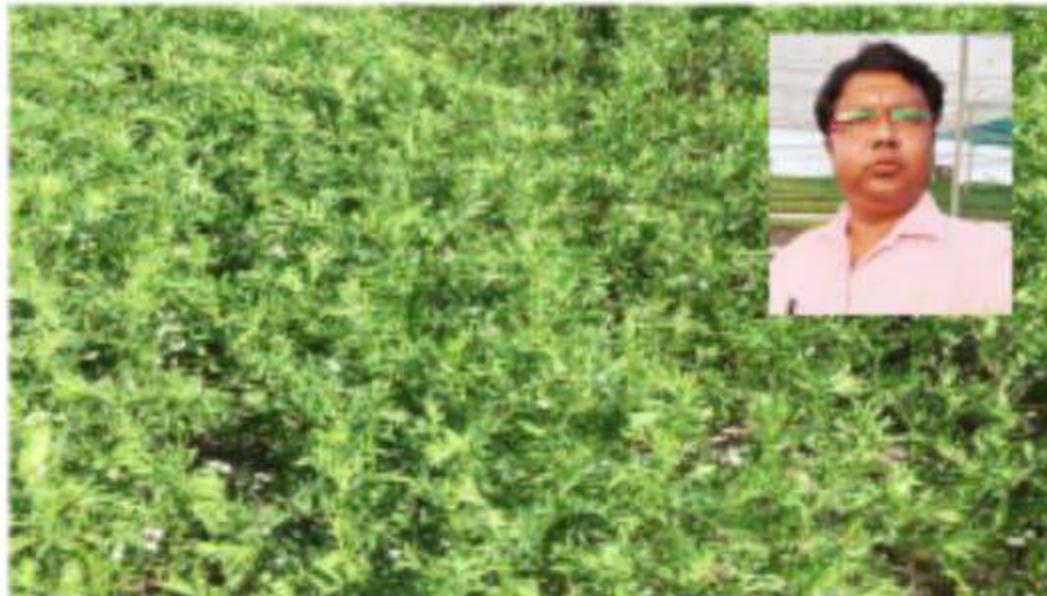
पृष्ठ : 8

मूल्य : 50 पैसा मात्र

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान- डॉ विनोद प्रकाश

(अग्रणी ज्ञानपत्र)

काशगुर (रहस्य संदेश)बोर्डरोफर लाइन कृषि एवं प्रौद्योगिकी विभागितालय काशगुर के अधीन संचालित कृषि विभाग बोर्ड लाइनप्रकाश के प्रमाण वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि इनहीं काशगुर में मसूर का उत्पादन एक व्यावसायिक उत्पादन है। मसूर दाल विस्तेर उत्पादन के नाम से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि मसूर जापान में भारत का विद्युत में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया कि मसूर के 100 ग्राम दाल में अंडीखन 25 ग्राम प्रॉटीन, 1.3 ग्राम वाया, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेश, 68 मिलीग्राम कैलिहम, 7 मिलीग्राम लोश, 0.2 । मिलीग्राम राश्वीफलेनिन, 0.51 मिलीग्राम थायोनिन और 4.8 मिलीग्राम नियोसिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से उन दारों को अर्धेक्ष मार्गिक चीहिकता पाई जाती है। उन्होंने कहा कि यह दाल लाभदायक है। इसके सेवन से उन दारों को मार्गिकता पायी जाती है। इसका उत्पादन की जगह यहाँ का सूखा चाना पानूजी



अधिक वैदेशिक के लिए मान नहीं लाभ हमारी चुकाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उत्पादन इत्तिहास त्रैमे- त्रैपीठल 15, त्रैनील 62, नुगी, के 75, आदि ची एल 81, बालाम 218 उत्पन्न है। उन्होंने बताया कि सभी ती चुकाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं ऐर से चुकाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम तीव्र प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उत्तराय 20 किलोग्राम नवाबन, 40 किलोग्राम फलाफल, 20 किलोग्राम चीटाल एवं 20 किलोग्राम चानका प्रति हेक्टेयर वी लाभदायक होती है। जिस ती दाल से उसे खेलों में 25 किलोग्राम तिंक प्रति हेक्टेयर वी दर से दें। चुकाई के पूर्ण तीव्र का लोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि विभाग भाई वैज्ञानिक नहीं के द्वारा की उत्पादन खींची कर्त तो दारों के उपत्र 20 से 25 चुंगाल एवं भूमे को उपत्र 30 से 35 कु प्रति हेक्टेयर तीव्र का मानदारी है।

सेवन से उत्पादन, बहुमूल्य, प्रति, कृषि व अनियन्त्रित पानी किसान में लाभकारी है। इसका हारा का सूखा चाना पानूजी

के लिए स्वास्थ्य व चौकिक होता है। शोध चान प्रश्न सरान ने किसानों को मानह दी है कि इसके इसमें

15 नवंबर तक कर दें

मसूर की बुआई

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. विनोद प्रकाश ने मसूर की बुआई के लिए शुक्रवार को एडवाइजरी जारी की। 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.21 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन, 0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिग्रा नियासिन पाया जाता है।

शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि अधिक पैदावार के लिए 15 नवंबर तक इसकी बुआई कर दें। बोने के लिए उन्नतशील प्रजातियां डीपीएल 15, डीपीएल 62, नूरी, के 75, आईपीएल 81 और एलएस 218 प्रमुख हैं। समय से बुआई के लिए 30 से 35 किलोग्राम और देर से बुआई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। बताया कि किसान आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल और भूसे की उपज 30 से 35 कुंतल प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है। (संवाद)

गेहूं की बुवाई, किसानों को दी गयी जानकारियां

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। वैज्ञानिक ने बताया कि देश की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। किसान भाई फसल की अधिक पैदावार के लिए इस समय बीज से लेकर खेत की तैयारी, बुवाई का समय, बीजों की उन्नत किस्मों का चयन और बुवाई की विधि के अलावा खाद एवं उर्वरक को लेकर तैयारी करें। किसानों को जैविक खादों के प्रयोग करने के साथ ही कंपोस्ट खाद के प्रयोग से फसल को लाभ होता है। किसान गेहूं की बुवाई के पूर्व अपने खेत की जुताई तीन से चार बार मृदा को काफी महीन तरीके से करें। और उस पर फैले खरपतवार व फसल अपशिष्ट का प्रबंध कर के नष्ट करे। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि किसान भाई गेहूं की फसल में सूचहम पोषक तत्वों का ही प्रयोग करें।